रात का पेड़

लेखन: ईव बन्टिंग

चित्र: टैड रैन्ड

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जंगल अद्भुत रहस्यों से भरे होते हैं

- ईव बन्टिंग

1994

एक शान्तिपूर्ण ग्रह के लिए

- टैड रैन्ड

1994

रात का पेड़

लेखन: ईव बन्टिंग

चित्र: टैड रैन्ड

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
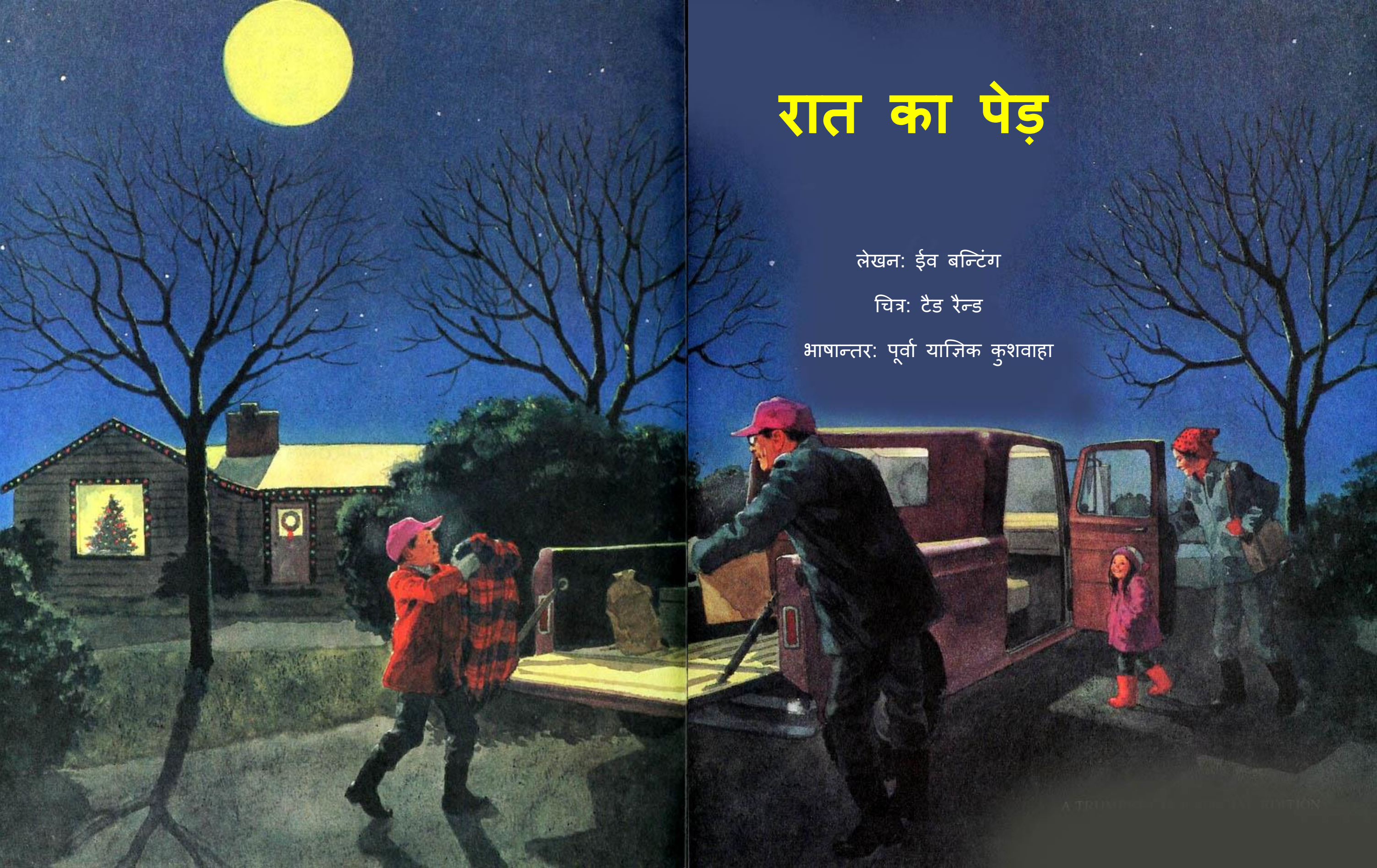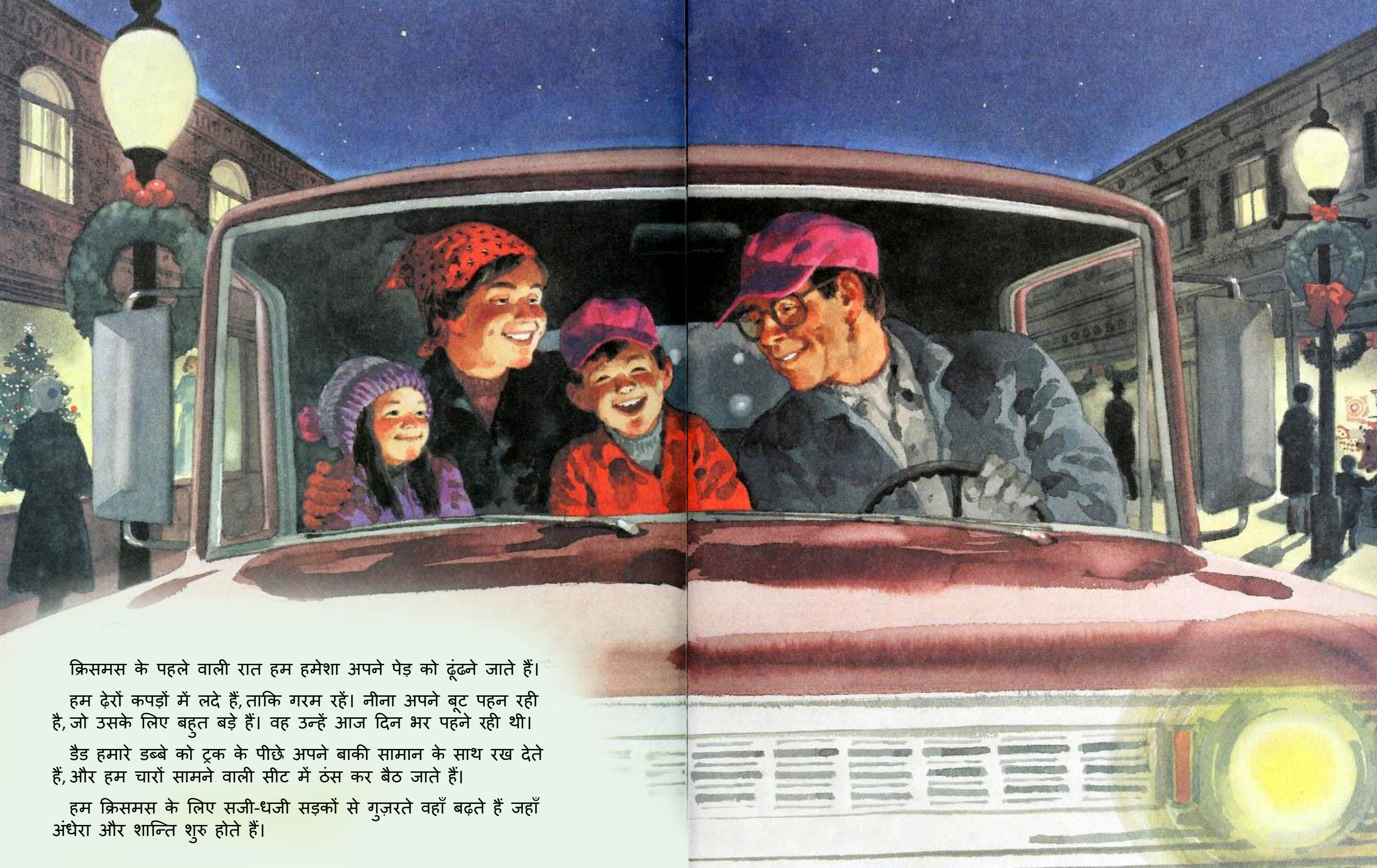
क्रिसमस के पहले वाली रात हम हमेशा अपने पेड़ को ढूंढने जाते हैं।

हम ढ़ेरों कपड़ों में लदे हैं, ताकि गरम रहें। नीना अपने बूट पहन रही है, जो उसके लिए बहुत बड़े हैं। वह उन्हें आज दिन भर पहने रही थी।

डैड हमारे डब्बे को ट्रक के पीछे अपने बाकी सामान के साथ रख देते हैं, और हम चारों सामने वाली सीट में ठंस कर बैठ जाते हैं।

हम क्रिसमस के लिए सजी-धजी सड़कों से गुज़रते वहाँ बढ़ते हैं जहाँ अंधेरा और शान्ति शुरु होते हैं।
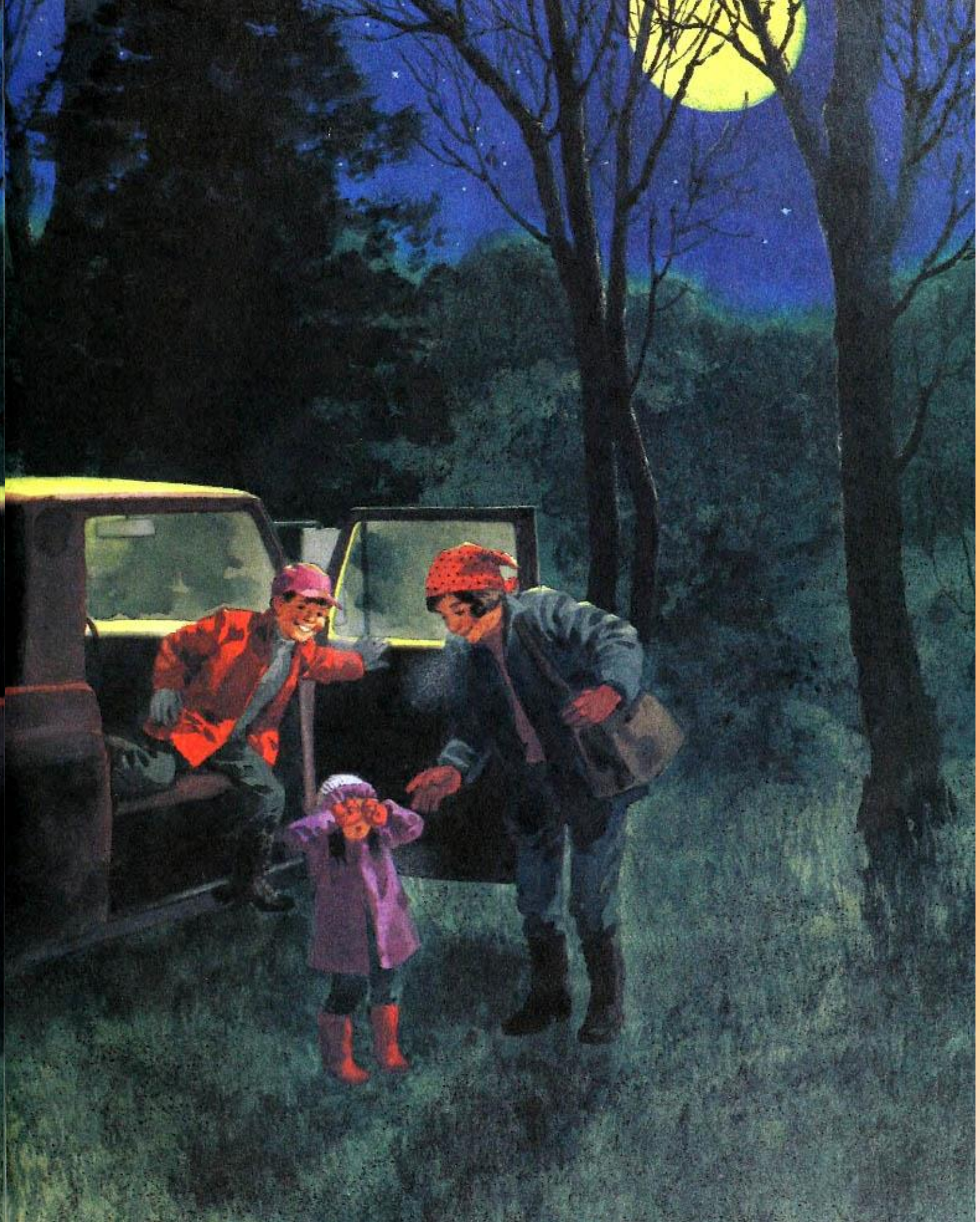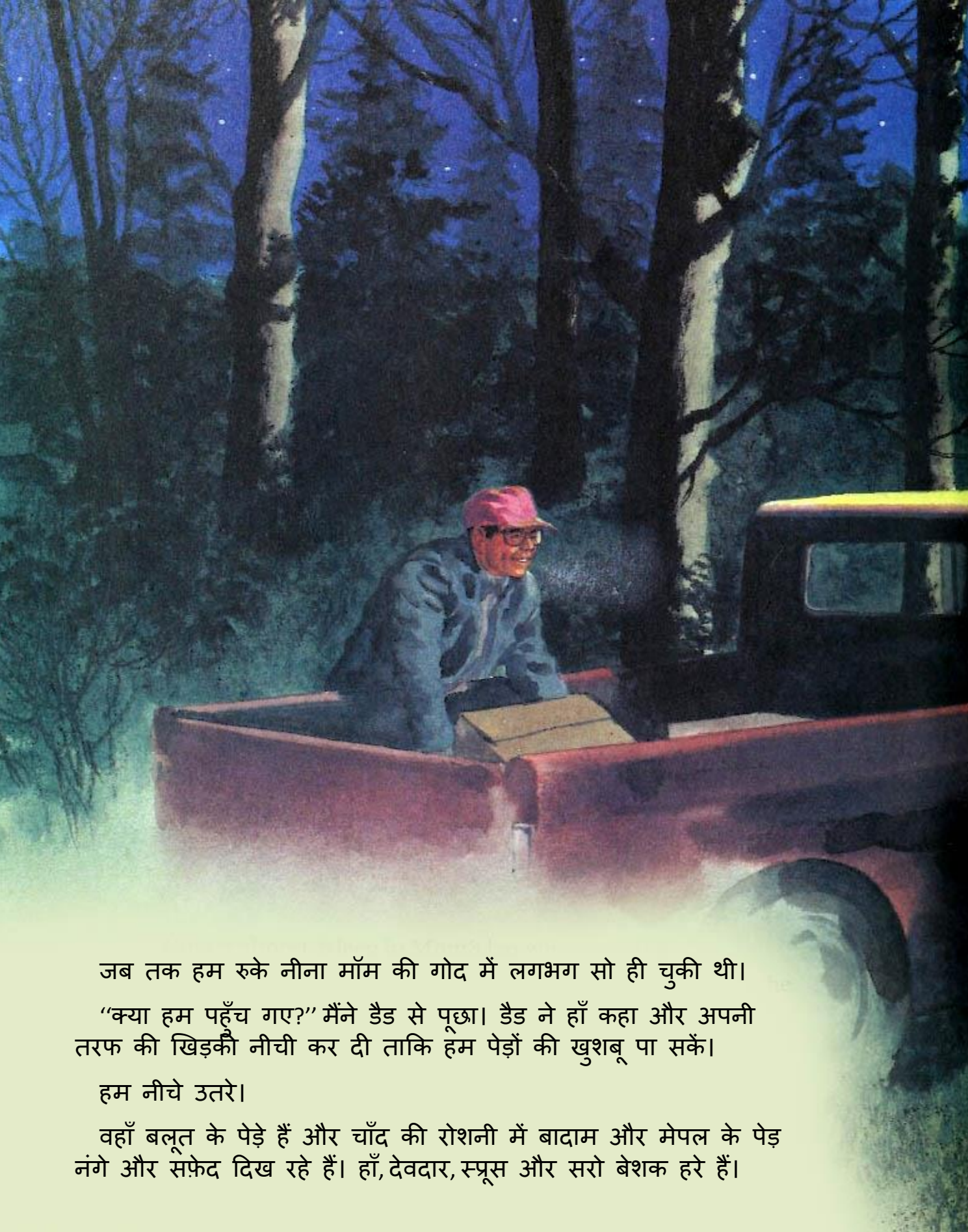
जब तक हम रुके नीना मॉम की गोद में लगभग सो ही चुकी थी।

''क्या हम पहुँच गए?'' मैंने डैड से पूछा। डैड ने हाँ कहा और अपनी तरफ की खिड़की नीची कर दी ताकि हम पेड़ों की खुशबू पा सकें।

हम नीचे उतरे।

वहाँ बलूत के पेड़े हैं और चाँद की रोशनी में बादाम और मेपल के पेड़ नंगे और सफ़ेद दिख रहे हैं। हाँ, देवदार, स्प्रूस और सरो बेशक हरे हैं।
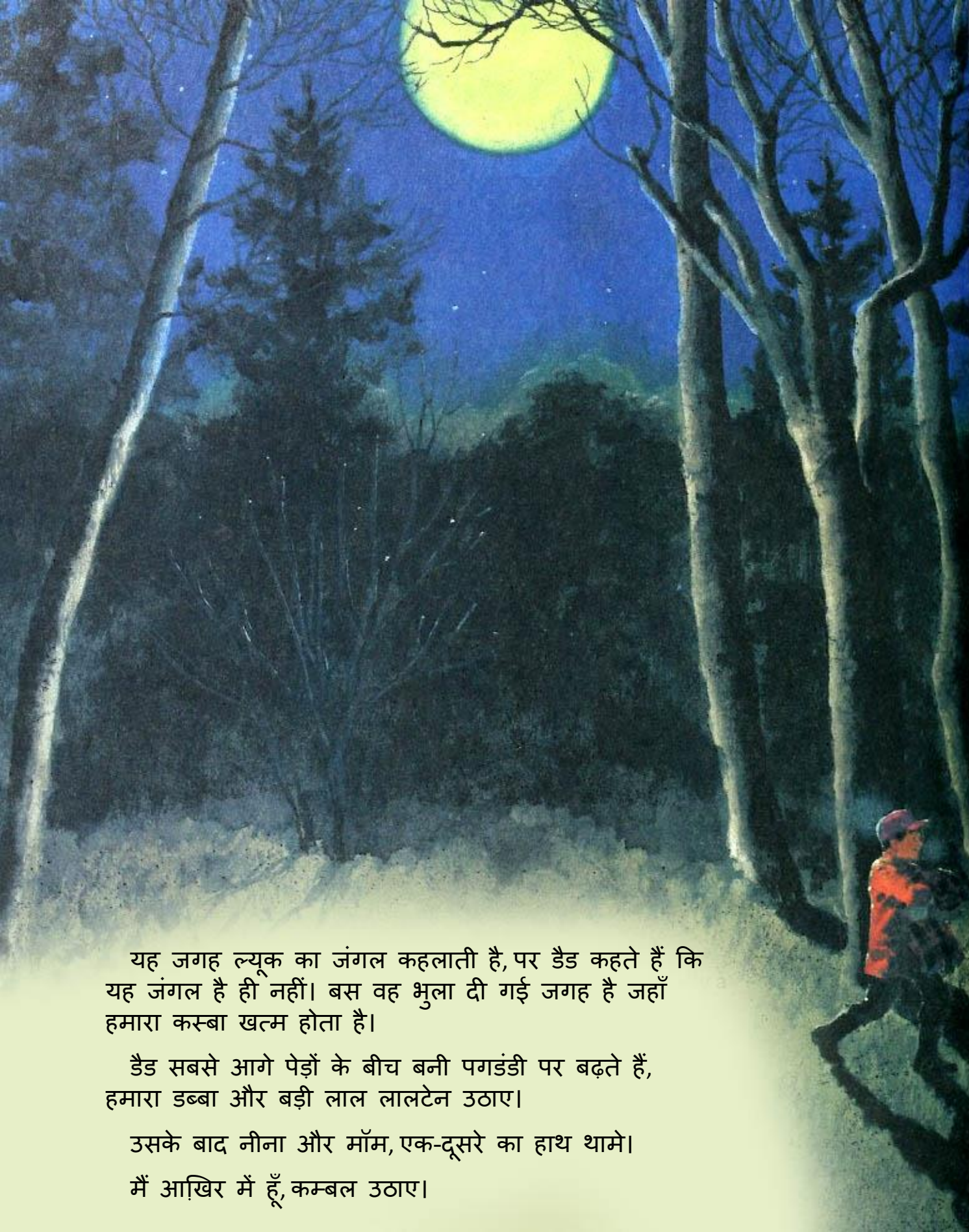
यह जगह ल्यूक का जंगल कहलाती है, पर डैड कहते हैं कि यह जंगल है ही नहीं। बस वह भुला दी गई जगह है जहाँ हमारा कस्बा खत्म होता है।

डैड सबसे आगे पेड़ों के बीच बनी पगडंडी पर बढ़ते हैं, हमारा डब्बा और बड़ी लाल लालटेन उठाए।

उसके बाद नीना और मॉम, एक-दूसरे का हाथ थामे।

मैं आख़िर में हूँ, कम्बल उठाए।
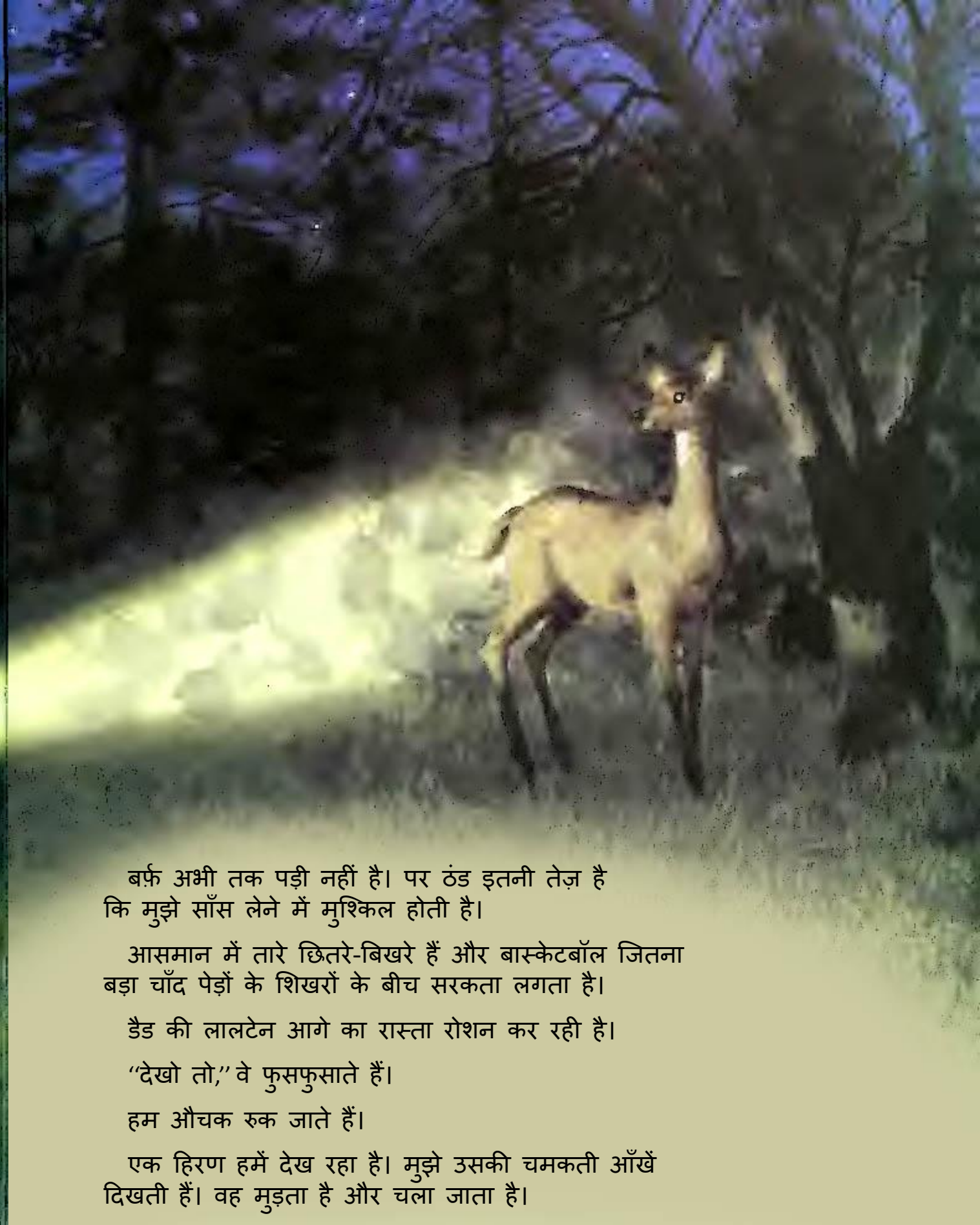
बर्फ़ अभी तक पड़ी नहीं है। पर ठंड इतनी तेज़ है कि मुझे साँस लेने में मुश्किल होती है।

आसमान में तारे छितरे-बिखरे हैं और बास्केटबॉल जितना बड़ा चाँद पेड़ों के शिखरों के बीच सरकता लगता है।

डैड की लालटेन आगे का रास्ता रोशन कर रही है।

"देखो तो," वे फुसफुसाते हैं।

हम औचक रुक जाते हैं।

एक हिरण हमें देख रहा है। मुझे उसकी चमकती आँखें दिखती हैं। वह मुड़ता है और चला जाता है।

"यह रहा हमारा पेड़," डैड ने कहा।

"पिछले साल से यह बड़ा हो गया है," मैंने कहा।

मॉम ने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा और बोलीं, "तुम भी।"

"मैं भी," नीना ने फ़ौरन जोड़ा। उसे हर चीज़ में शामिल न किया जाना नापसन्द है।
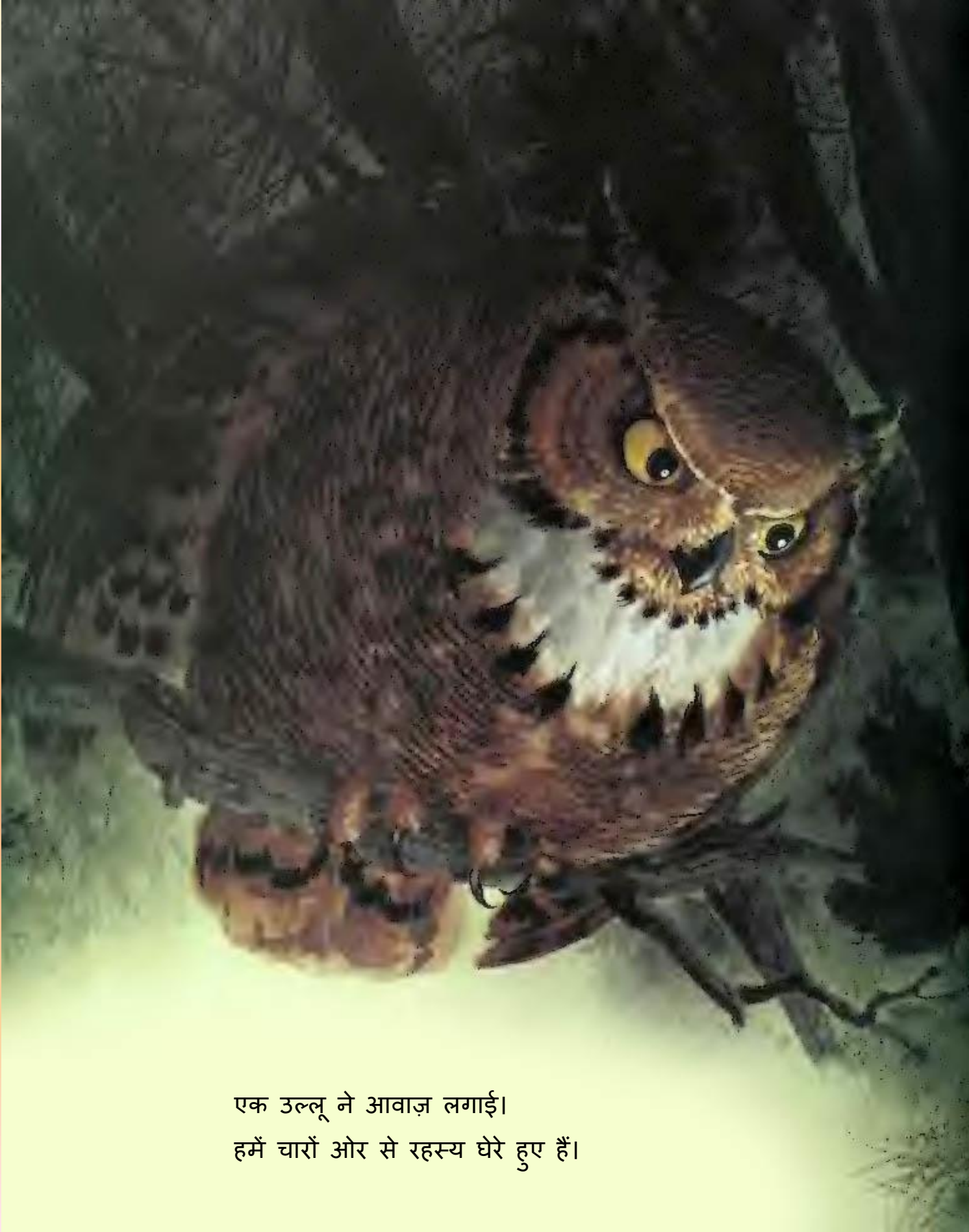
एक उल्लू ने आवाज़ लगाई।
हमें चारों ओर से रहस्य घेरे हुए हैं।
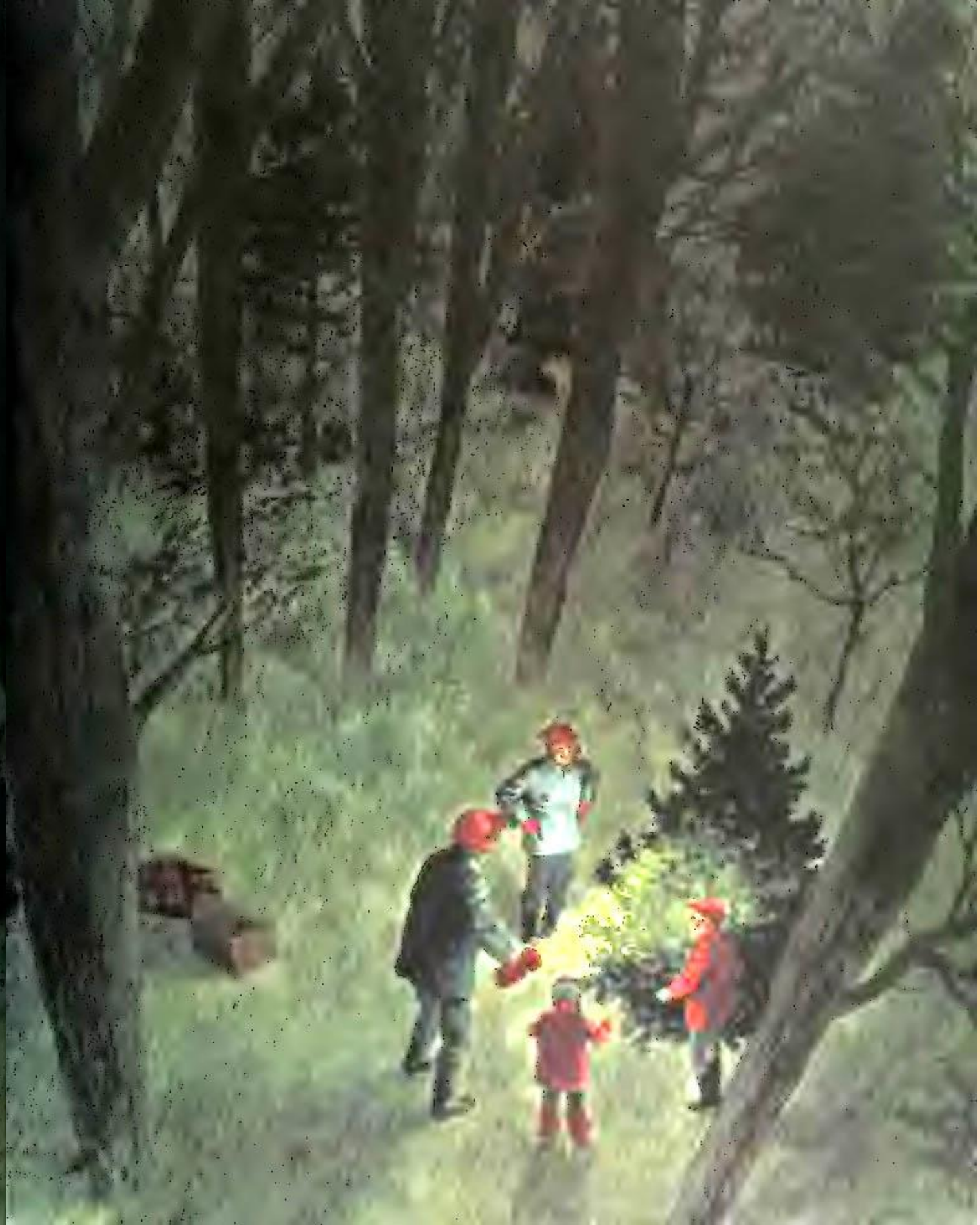
“क्या मैं पॉपकॉर्न की माला लगा सकती हूँ?” नीना ने पूछा। वह ऊपर-नीचे कूदने लगी और उसका एक बूट ही निकल गया। उसे वापस पहनाने में मॉम ने मदद की।

नीना ने माला का एक सिरा पकड़ा और मैंने दूसरा। हमने उसे पेड़ के गिर्द लपेट दिया। हम सुतली से बांघ कर सेब और संतरे भी लाए थे। हमने उन्हें पेड़ की टहनियों पर लटकाया। जब दस्ताने पहने हों तो कुछ लटकाना आसान नहीं होता। पर ठंड इतनी है कि दस्ताने उतारे नहीं जा सकते।

हमने पिछले सप्ताहों में सूरजमुखी के बीजों को जवार के आटे और शहद में मिला लड्डू बनाए थे। हमने उन्हें भी लटका दिया।

हमने पेड़ के नीचे छिले मेवे, डबलरोटी का चूरा और सेव के टुकड़े बिखेरे, उन छोटे जानवरों के लिए जिनके लिए पेड़ पर चढ़ना मुश्किल हो।

हमारा पेड़ बेहद सुन्दर लगने लगा।

मॉम ने कहा कि मैं कम्बल बिछा दूँ ताकि हम सब बैठ कर अपने सजे-धजे पेड़ को निहार सकें। वे अपने साथ थर्मस में भर कर गरम चॉकलेट वाला दूध लाई थीं। मैंने दस्ताने उतार अपने हाथ कप के गिर्द गरमाए।

तब डैड ने लालटेन बुझा दी, हम सब चुप हो गए, इस उम्मीद में कि शायद कोई छोटा जानवर हमारे रहते ही आ जाए, या फिर वह हिरण ही लौट आए। पर वह आया नहीं।

"हिरण शर्मीला होता है," डैड ने कहा। "मैं भी शर्मीली हूँ," नीना ने फ़ौरन डैड से कहा।

हम लौटते उसके पहले मुझे एक क्रिसमस कैरल (क्रिसमस पर गाए जाने वाले गीत) चुनने का मौका मिला। मैंने "ओ कम यी फेथफुल" चुना।

और नीना ने "ओल्ड मैकडॉनल्ड हैड अ फार्म!"

"यह कोई क्रिसमस गीत थोड़ी ना है, बुद्धु," मैंने उससे कहा। पर मॉम ने कहा कि कोई बात नहीं यह भी अच्छा गीत है।

नीना का चुना गीत हमने जल्दी-जल्दी गाया, क्योंकि उसके कई अंतरे हैं और ठंड बढ़ती जा रही थी।
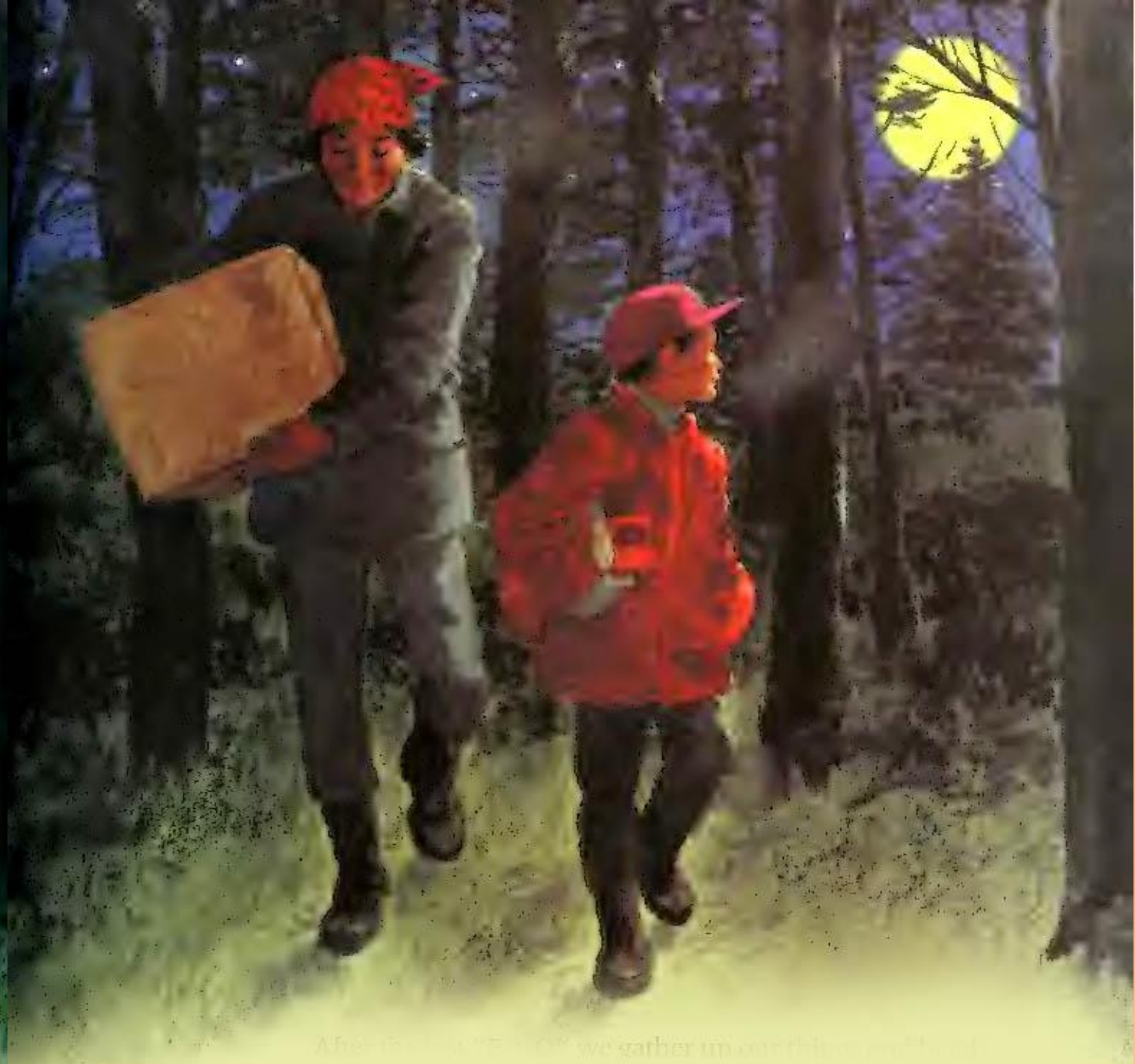
आख़िरी "ई-आ-ओ" के बाद हमने अपनी चीज़ें समेटीं और ट्रक की ओर लौटे।

मैंने आख़िरी बार पलट कर देखा।

हमारे पेड़ ने खुद को अंधेरे में लपेट लिया था। पर मुझे लगा कि मैं उसे फिर भी देख पा रहा हूँ। तारे उसकी टहनियों में उलझे थे और चाँद उस पर कुछ टेढ़ा-सा लटका था।

नीना थक चुकी थी, सो डैड ने उसे कम्बल में लपेट कर उठाया। मैंने उसके बूट पकड़े।

बाद में घर पर बिस्तर में लेटे-लेटे मैंने हमारे पेड़ के बारे में सोचा। और यह भी कि कल घर मौसियों-चाचियों, मौसाओं-चाचाओं और मौसेरे-चचेरे भाई-बहनों से, हंसी-खुशी और शोरगुल से भरा होगा। तब मेरा मन वापस ल्यूक के जंगल पर लौट गया।

मैं सोचने लगा कि परिन्दे और गिलहरियाँ, पौसम, रैकून और स्कंक (विभिन्न बिल्ली जितने बड़े जानवर) शायद क्रिसमस की दावत का मज़ा हमारे पेड़ के पास लें।
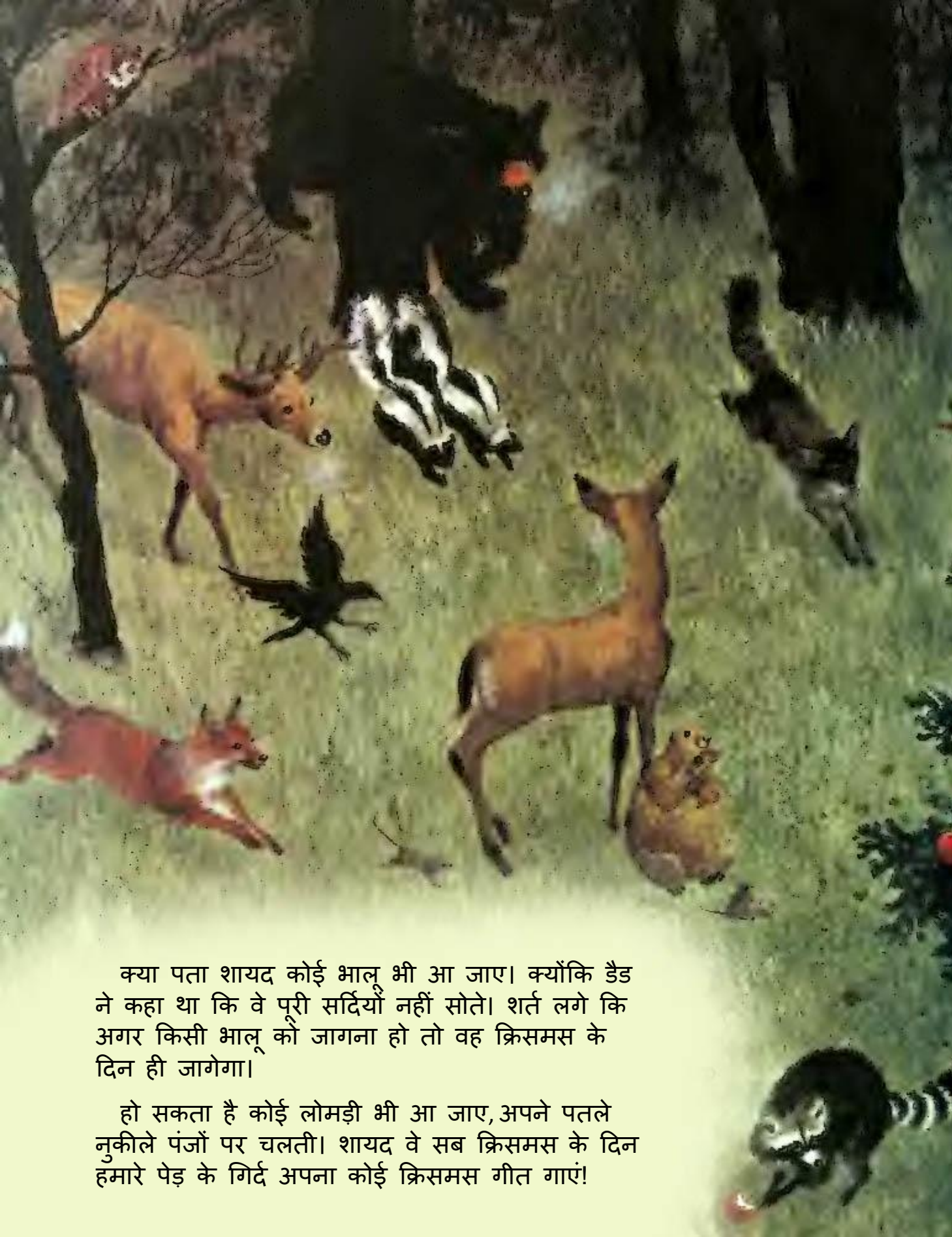
क्या पता शायद कोई भालू भी आ जाए। क्योंकि डैड ने कहा था कि वे पूरी सर्दियों नहीं सोते। शर्त लगे कि अगर किसी भालू को जागना हो तो वह क्रिसमस के दिन ही जागेगा।

हो सकता है कोई लोमड़ी भी आ जाए, अपने पतले नुकीले पंजों पर चलती। शायद वे सब क्रिसमस के दिन हमारे पेड़ के गिर्द अपना कोई क्रिसमस गीत गाएं!

एना ईव के लिए जो हमारी
पैलिन्ड्रोम लड़की है
- ई.बी.

बिल मार्टिन जूनियर के लिए
जिसकी वजह से मैं बच्चों की
क़िताबों की चित्रकार बना
- टी.आर.